International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website: https://ijaar.co.in/*
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

Original Article

बौद्ध दर्शन में व्यक्तित्व विकास के प्रमुख सिद्धांत

डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना

सहायक प्राध्यापक,

विभाग अध्यक्ष -पाली विभाग,

किशोरी सिन्हा महिला महाविद्यालय ,औरंगाबाद (बिहार)

Manuscript ID:
IJAAR-130221

ISSN: 2347-7075
Impact Factor – 8.141

Volume - 13
Issue - 2
November - December 2025
Pp. 129 - 133

Submitted: 21 Dec 2025
Revised: 28 Dec 2025
Accepted: 30 Dec 2025
Published: 1 Jan 2026

Corresponding Author:
डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना

Quick Response Code:

Website: https://ijaar.co.in/

DOI:
10.5281/zenodo.18279991

DOI Link:
https://doi.org/10.5281/zenodo.18279991

Creative Commons

OPEN ACCESS

भारत अति प्राचीन देश रहा है और इसकी संस्कृतिक निधियां भी उतनी ही प्राचीन है। इस देश की दो समानांतर धाराएं प्राचीन काल में प्रवाहित होती रही है, एक ओवर धारा थी जिसका मूल आधार जन्म से था और तद्रूप जन्मना पद्धति प्रतिस्थापित हो विकसित हुई अर्थात जाति के आधार पर उच्च -नीच को प्रतिस्थापित कर उसे ही वर्णाश्रम व्यवस्था या वर्णाश्रम-धर्म का नाम दिया गया। इसी संस्कृतिक धारा का दूसरा नाम जो शास्त्रों में प्रचलित था ब्राह्मण धर्म कहा गया है। इसके समानांतर देश में एक दूसरी धारा प्रवाहित हुई, जिसे शास्त्रों में या विद्वानों द्वारा श्रवण संस्कृति के नाम से जाना गया। यह जन्म पर आधारित न होकर कम पर व्यवस्थित हुई। किसी व्यक्ति का उच्च या नीच होना उसके कर्म या बुद्धि - बल पर निर्धारित होता है। श्रमण संस्कृति के अंतर्गत अनेक धार्मिक संप्रदाय गिनाये गए हैं यथाआजीवक, जटिल, जैन तथा बुद्ध द्वारा परिवर्तित धर्म (संप्रदाय) हैं।

भारतवर्ष में प्राय 1500 वर्षों तक श्रवण संस्कृति का वर्चस्व रहा। इनमें बुद्ध द्वारा प्रतिष्ठापित धर्म दर्शन ही प्रमुख रहा। किसी देश की संस्कृति के मूल्यांकन अथवा किसी अन्य संस्कृति से तुलनात्मक अध्ययन हेतु तीन मूलाधार हैं जिसके द्वारा संस्कृति का निर्धारण होता है जो निम्नलिखित है।-१. कला एवं स्थापत्य २. शिक्षा एवं साहित्य ३. आध्यात्मिक चिंतन एवं साधना।

ध्यान पूर्वक निरूपण करने पर बौद्ध धर्म-संबंधी जो संस्कृतिक विरासत इन तीनों अंगों के आधार पर प्राप्त करते हैं उबेश्वर परी है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)

This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International License (CC BY-NC-SA 4.0), *which permits others to remix, adapt, and build upon the work non-commercially, provided that appropriate credit is given and that any new creations are licensed under identical terms.*

How to cite this article:

डॉ. अमरेंद्र कुमार मौलाना. (2025). बौद्ध दर्शन में व्यक्तित्व विकास के प्रमुख सिद्धांत. International Journal of Advance and Applied Research, 13(2), 129–133. https://doi.org/10.5281/zenodo.18279991

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

संस्कृति के जो तीन मूलाधार हैं उन के द्वारा बुद्ध के श्रमण- संस्कृति मैं पूरा बर्चस्व रहा है। इसकी विवेचना संभव नहीं है, फिर भी हम पाते हैं कि चाहे सारनाथ की सुंदरतम प्रतिमा हो अथवा अजंता के भित्ति चित्र हो या सांची का अनुपम स्तूप हो या नालंदा के खंडहर में 14 फीट मोटी दीवार की नीव हो, सभी अनुपम है, इसी प्रकार विहार, माविहार बौद्धों के विश्वविख्यात शिक्षण स्थल थे और उनमें रचित प्राचीन चीनी या तिब्बती भाषाओं में करोड़ पृष्ठों में रचित बौद्ध- साहित्य और फिर बुद्ध का प्रतीत्समुत्पाद दर्शन तथा सैयावेदयित निरोध समाप्ति वाला रूप ध्याय हो, सभी संस्कृति के सौष्ठव को उजागर करते हैं।

हम यह मानते हैं कि वही धर्म संप्रदाय सार्वजनिक हो सकता है जिसमें ये तीनगुण तत्व विद्यमान है- १. आर्गह रहित तर्क सम्मत हो २. सर्व सुलभ हो ३. लोक कल्याणकारी हो। इन्हीं तीन अवधारणाओं के आलोक में हम बुद्ध -धर्म -दर्शन के सार्वजनिक होने के विषय वास्तु के व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास करेंगे।

हम जानते हैं कि मानव के व्यक्तित्व विकास के लिए और पशुओं की अपेक्षा 10 विशिष्ट गुण है-दान, शील,वीर्य, नैष्कर्म्य,अधिष्ठान, ध्यान, सत्य, मैत्री, क्षान्ति और प्रज्ञा। सिंधु गुना के कारण ही व्यक्ति अन्य जीवधारीयों से विशिष्ट है और जिस व्यक्ति में इन गुणों की प्राकाष्ठा को भी पार कर लिया है अर्थात मानव का वह व्यक्तित्व जो 10 परमिताओं से संपन्न है। इस प्रकार बुद्ध एक व्यक्ति नहीं अपितु बुद्ध को मानव का सर्वोच्चकृष्ट व्यक्तित्व कह सकते हैं। इस प्रकार हम भी कह सकते हैं कि प्रत्येक मानव के अंदर बुद्ध बीज अवस्थित है। कोई भी व्यक्ति इस मानवीय सद्गुणों की अभ्यास से प्रचलित कर समुज्जवल हो गुण संपन्न हो सकता है और इस प्रकार प्रयास से उत्तम से उत्तमतम व्यक्तित्व वाला हो सकता है और अंततः दसों परमिताओं को प्राप्त कर बुद्ध हो सकता है।

सिद्धार्थ गौतम बुद्ध ने उपरोक्त 10 मानवीय गुणोंव को किस प्रकार विशुद्ध किया जाए, की साधना विधि का निरूपण किया जा सके जो सबके लिए समान रूप से उपयोगी हो। यह 10 मानवीय गुण परिवेश के कारण तथा पशु वृद्धि होने के कारण मालिन होते रहते हैं। बुद्ध ने इसके प्रचलन के लिए विपश्यना विधि को बताया जो संसार में सभी कालों में सभी जनों के व्यक्तित्व विकास के लिए कल्याणकारी, सर्व सुलभ और हितकर है। इस प्रकार हम कह सकते हैं की बुद्ध की अवधारणा सर्वजनिक, सर्वदेशिक एवं सर्वकालिक है, साथ ही आर्गह रहित व तर्कसंगत है।

इस प्रकार हर धर्म, दर्शन व्यक्तित्व विकास के निर्माण का एक विशेष प्रकार का सामाजिक परिवेश होता है। कोई भी धर्म दर्शन बगैर सामाजिक परिवेश के पैदा नहीं होता। किसी भी प्रकार के विचार के निर्माण के पीछे उसका अपना सामाजिक परिवेश होता है। हर धर्म दर्शन और विचारधारा का आधार कोई ना कोई समाज होता है। इस प्रकार उसका कोई ना कोई लक्ष्य होता है और उसे लक्ष्य

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

की प्राप्ति के लिए लोगों को प्रेरित उत्साहित प्रभावित किया जाता है। वर्गीय समाज में धर्म ,दर्शन और विचारधारा का दृष्टिकोण वर्गीय होता है। जातीय समाज में उसका दृष्टिकोण जातिय होता है। इसीलिए हम देखते हैं कि सभी धर्म, दर्शन, विचारधाराए एक- सी लगने पर भी एक नहीं होती है, उनमें कुछ समानताएं होने के बावजूद ढेर सारी विभिन्नताएं भी होती है। इसलिए सभी धर्म ,दर्शन और विचारधाराओं को एकसमान, यह सा सामान या, सभी धर्म समान है, ऐसा नहीं कहा जा सकता है। सभी धर्म की, अपनी -अपनी विशेषताएं, मान्यताएं हैं और सभी का समाज में अपना- अपना महत्व है। बौद्ध धर्म भी विश्व के प्रमुख धर्म से एक है और बौद्ध धर्म तथा दर्शन की विश्व धर्म तथा दर्शन में अपनी एक पहचान है, अपना एक स्वतंत्र स्थान है। बौद्ध धर्म दर्शन की अपनी एक स्वतंत्र सोच है, सोने की अपनी एक स्वतंत्र प्रणाली है। बौद्ध धर्म और दर्शन का विश्व के प्रति अपना एक स्वतंत्र दृष्टिकोण है। बौद्ध धर्म और दर्शन का अपना एक सामाजिक दर्शन है, अपना एक सामाजिक आदर्श है, उसकी अपनी एक आदर्श समाज व्यवस्था है जिसके कारण बौद्ध धर्म तथा दर्शन का विश्व धर्म तथा दर्शन में अपना एक स्वतंत्र स्थान और महत्व व्यक्तित्व विकास में बना हुआ है।

भगवान बुद्ध के समस्त धर्मदेशना मानवीय गुणों के समुन्नयन तथा विश्व- मानवता के संरक्षण के लिए ही प्रज्ञप्त है। उनकी संपूर्ण धर्मदेशना शील, समाधि तथा प्रज्ञा अंतमुक्त है। शील में समाहित होकर हीअर्थात् विप्रसन्न आचरण में अवस्थित होकर ही अपने श्रेयसी क्रियाओं को संपादन इस प्रकार करता है जिस प्रकार अवन्याश्रित होकर अपने प्रत्यद्धिक संरचना आदि क्रियो का संपादन करता है।[१]

भगवान बुद्ध के दु:खापन्न मनुष्य को भावाभ्दव संसार रूपी दुख से मुक्ति पाने के लिए त्रिस्कन्धात्मक अष्टांगिक मार्ग का निरूपण एवं प्रज्ञापन किया है। उत्पाद और सन्स्थिति के द्वारा जो मानव को रखता है, परिष्कृत करता है, उसे दुख कहां है उसे दुख कहां है-उप्पादठितिवसेन द्वितधा खणतीति दुक्खं। दु:ख की सत्ता सर्वथा विदित है और उसका त्याग कथापि नहीं किया जा सकता है। आकाश में जैसे हवा परिव्याप्त है, शमी के गर्भ में जैसे अग्नि और पृथ्वी के गर्भ में जैसे जल व्याप्त है, इस प्रकार दु:ख सीट और शरीर में परी व्याप्त है -

आकाशयोनि: पवनो यथा ही यथा शमीगर्भशयो
हुताश:।
आपो यथांतर्वसुधारायवूच दु:खं तथा
चित्तशरीरयोनि:।।
अपांग द्रवएवं कठिनत्वमुर् वायोश्चलत्वं
ध्रुवभौष्ण्यभग्ने:।
यथा स्वभावो हितथा स्वभावो दु:खं शरीरस्य चत
चेतशस्च।।[२]

तथागत बुद्ध ने दुखों से मुक्ति के लिए चार आर्य सत्यों का पता लगाया । इन्हीं सत्यों के समय ज्ञान के कारण उन्हें संबोधित की प्राप्ति हुई। ये चार आर्यसत्य है –

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

१. **दु:ख:**-जीवन दु:खमय है (जन्म , बुढ़ापा, बीमारी, मृत्यु)

२. **समुदाय** (दु:ख का कारण):-इच्छा (तृष्णा) और आसक्ति दु:ख का मूल कारण है।

3. **निरोध** (दु:ख का अंत):-इच्छाओं का त्याग करने से दु:ख का अंत संभव है (निर्वाण)।

4. **मार्ग** (दु:ख निवारण का मार्ग):-अष्टांगिक मार्ग सर्वोत्तम एवं पवित्र जीवन जीने के लिए संतुलित एवं श्रेष्ठ कर मार्ग है। यह अष्टांगिक मार्ग मध्य मार्ग (मज्झिमा पट्टीपदा) जिसमें दो अतिवादों का आंतों का परिवर्जन समुद्धिष्ट है। दो अंत तथा दो अतिवाद है-भोग विलास पूर्ण जीवन तथा आत्मनिर्यात नियंत्रण साधना। भगवान बुद्ध ने दो आंतों को निकट से देखकर उसकी निरर्थकता, सारहीनता तथा उद्देश्य हीनता का अनुभव किया था। बौद्ध दृष्टि में भावबंधन से विमुक्ति का एकमात्र साधन विराग है जो केवल सम्यक दृष्टि (यथार्थ ज्ञान) से उत्पन्न हो सकता है। बुद्ध उपदेशित मध्य मार्ग सर्वथा विशिष्ट मार्ग है जो अद्यतन परिवेश में भी सर्वथा प्रासंगिक है, जो आर्यजीवन के विशोधन के लिए एकमात्र ही मार्ग है, दूसरा कोई मार्ग नहीं है। इस मार्ग पर चलकर व्यक्ति सांसारिक क्लेशों से सर्वथा मुक्त हो जाता है क्योंकि यहकल्याणकारी मार्ग है-

एसोव मग्गो नत्थइआइओ दस्सनस्स विसुद्धिया।
एतं हि तुम्हें पटिपज्जथ मारस्सेतं पमोहनं।।[३]

यह अष्टांगिक मार्ग त्रिस्कंधात्मक है अर्थात शील, समाधि तथा प्रज्ञा में परिभक्त है।[४] जो निम्नलिखित हैं-सम्मदिट्ठि (सम्यक् दृष्टि), सम्मासंकप्पो (सम्यक् संकल्प), सम्मवाचा (सम्यक् वाक), सम्माकम्मन्तो(सम्यक् कर्मान्त, सम्मा आजीवो(सम्यक् आजीव),सम्मावायामो(सम्यक् व्यायाम),सम्मासति(सम्यक् स्मृति),सम्मासमाधि(सम्यक समाधि)।

बौद्ध- धर्म शील, समधी और प्रज्ञा के आदर्श से प्रतिमंडित है। शील सभी कुशल कर्मों का आधार है। यह कायिक, वाचिक और मानसिक शुद्धता का अभिप्राय है। समाधि मन कि एकाग्रता और प्रज्ञा कुशलचित्त से युक्त विपश्यना ज्ञान का अभिवचन है। शील, समाधि और प्रज्ञा का विस्तृत रूप ही बुद्ध का अष्टांगिक मार्ग है। यह आज अष्टांगिक मार्ग बौद्ध -धर्म की आचार्य- मीमांसा का चरम साधन है। इस मार्ग पर चलकर व्यक्ति अपने दु:खों का नाश कर देता है तथा निर्माण प्राप्त कर लेता है। इसलिए यह समस्त मार्गो में श्रेष्ठ माना गया है-"मग्गानट्ठगि्डको सेट्ठो"।[५]

बौद्ध दर्शन में अनात्म वाद एक केंद्रीय सिद्धांत है एक केंद्रीय सिद्धांत है जो किसी स्थाई, अपरीवर्तनीय आत्मा या 'सव'के अस्तित्व से इनकार करता है, यह सिखाता है कि व्यक्ति मात्र पांच परिवर्तनशील घाट को (स्कंधों) का एक संयोजन है, इस भ्रम से मुक्ति पाने से ही दु:ख का अंत होता है। यह सिद्धांत शाश्वत आत्मा के विचार (आत्मवाद) से अलग है, कोई केंद्रीय, अपरिवर्तनीय"मैं'या आत्मा नहीं है जो जन्म - मृत्यु के चक्र से परे हो, व्यक्ति को पांच गतिशील और छाणभंगुर घटकों का एक संयोजन माना जाता है:-रूप, वेदना, संज्ञा,संस्कार

International Journal of Advance and Applied Research
Peer Reviewed | International Open Access Journal
ISSN: 2347-7075 | Impact Factor – 8.141 | *Website:* https://ijaar.co.in/
Volume-13, Issue-2 | November - December 2025

और विज्ञान का एक निरंतर परिवर्तन प्रवाह है, जिस व्यक्ति की पहचान बनती है। व्यक्ति को आसक्ति (राग -द्वेष) से मुक्त करता है और निर्माण प्राप्ति के लिए आवश्यक'सम्यक ज्ञान 'का हिस्सा है, जिस व्यक्ति व्यक्तित्व विकास के साथ शांत और शांतिपूर्ण जीवन जिया जा सकता है।

बस दर्शन में ध्यान (समान अभ्यास) विपश्यना अतः दृष्टि और समर्थ स्थिरता प्रदान करता है। ध्यान का तात्पर्य यह है कि यह एक व्यापक शब्द है, जिसका अर्थ है मन को एकाग्र करना और शांत करना ताकि आंतरिक शांति और अंत दृष्टि प्राप्त हो सके। ताकि मानसिक अशुद्धियों को दूर करना और निर्माण प्राप्त करना है।

१. **ध्यान:**-यह एक व्यापक शब्द है जिसमें विभिन्न मानसिक प्रशिक्षण शामिल है, जिसका उद्देश्य मन शांत, केंद्रित और जागरूक बनाना है।

२. **विपश्यना:**-का अर्थ है ' वि '(विशेष)+ ' पश्य '(देखना)=विशेष रूप से देखना, यानी जैसी है वैसी ही देखना। यानी शरीर और मन की क्षणभंगुरता दुख और अनात्मक को प्रत्यक्ष अनुभव से समझना और आत्म -शुद्धि करना जिससे वास्तविकता का ज्ञान होता है।

३. **शमर्थ:**-मन को स्थिर करना, विकर्षणों को कम करना, और गहन मानसिक शांति व एकाग्रता विकसित करना है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मध्य मार्ग में चतुरार्य्य सत्य एवं आर्य अष्टांगिक मार्ग की अपनी महत्वपूर्ण विशेषता है। आर्य अष्टांगिक मार्ग को ही मध्यम मार्ग भी कहते हैं क्योंकि सभी सिद्धांत इसमें सन्निहित है। भगवान बुद्ध का व्यक्तित्व के विकास के लिए दृष्टिकोण इतना सूस्पष्ट सत्य और अविरोधात्मक है कि इसकी व्याख्या की आवश्यकता नहीं। यदि संसार में दु:ख या असमंजस ही ना होता तो हमें किसी धर्म की आवश्यकता ही न होती। जैसे कोई वैध रोग के निदान हेतु उसे तदनुसार औषधि बतलाता है वैसे ही सांसारिक रोगों से मानव रूपी रोगी को भगवान बुद्ध ने आवश्यक औषधि बतला दी थी और वह औषधि अष्टांगिक मार्ग है जिसे मध्यम मार्ग के नाम से जाना जाता है। यह मार्ग आत्म शुद्धि करने वाला और ज्ञान अर्जित करने वाला है। इस मार्ग पर चलने से समस्त दु:खों का अंत हो जाता है। यह वह मार्ग है जो व्यक्ति को स्वतंत्र विचारक और कुशल कर्मी तो बनता ही है, उसकी नैतिक और मानसिक विकास भी करता है। इसलिए इस मध्यम मार्ग को बुद्ध ने आंख देने वाला, ध्यान कराने वाला, और शक्ति देनेवाला कल्याणकारी मार्ग घोषित किया है। इसके अनुसरण से मनुष्य में मैत्री, मुदिता, करुणा और अपेक्षा-इन चार ब्रह्म बिहार का उदय होता है जो सामाजिक जीवन में समरसता और सदभाव लाते हैं।

संदर्भ:

१. तत्व संग्रह।
२. सौन्दरन्द, १६/११-१२.
३. धम्मपद,२७६.
४. सौन्दरनन्द,१६/३७.
५. धम्मपद,२०/१